-

...

सं. ग्री.वि./फरीदावाद/218-84/16878.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. हिन्दुस्तान वायर लि., प्लाट नं. 267-268, संक्टर-24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री मोती लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, श्रव श्रीशोगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415—3श्रम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये श्रीधसूचना सं. 11495—जी. श्रम 88-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री मोती लाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 23 ग्रप्रैल, 1985

सं. भो. वि | फरीदाबाद | 24-85 | 17851. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. कोमेट इन्टरप्राईजिज, प्लाट नं. 36, सैक्टर 4, फ़रीदायाद, के श्रमिक श्री नसख्दीन तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधत्त्वना सं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये श्रीधत्त्वना सं० 11495-जी-श्रम/88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीधिनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री नसरूदीन की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो. वि./फरीदाबाद/8-85/17858.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. एस. एस. एस. एस. वी. सिवधोरटी कन्ट्रेक्टर, लारसन एण्ड टब्यूरो लि०, 12/4, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री बाबू राम तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई शौद्योगिक विवाद हैं;

भ्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपद्वारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3—श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. 11495—जी—श्रम/88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उसके सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अबना सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री बाबू राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

जै० पी० रतन.

उप सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।